॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

बाळबोध जैनधर्म

भाग १ लो.

कर्ता-

बाबू दयाचंद्र गोयलीय जैन बी. ए.

अनुवादक अने प्रकाशक-

मूळचंद कसनदास कापडिया,

दि० जैन पुस्तकालय, चंदावाडी-सूरत.

आवृत्ति बीजी] वीर सं. २४४९ [प्रत १०००

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला-सुरतमां मुळचंद कसनदास कापडियाए छाप्युं.

किं० रु० ०-०-९.

शिक्षकोने सूचना.

ए तो जाणीतुं छे के बाळकोनुं हृदय घणुं कोमळ होय छे जेथी जे वात न्हानपणमां छोकराओनां हृदयमां उतारी देवाय छे तेने तेओ जिंदगी सुधी भूलता नथी, ए माटे धर्मनुं शिक्षण आपवामां घणीज काळजी राखवी जोईए अने न्हानपणथीज तेओने दरेक विषय सारी रीते समजाववो जोईए अने ए माटे सौथी सारो रस्तो एज छे के चोपडीमांथी उदाहरणो वडे मोढेथी शिक्षण आपवुं के जेथी साधारण रीते बाळको समजी शके अने तेमनुं मन पण भणवामां लागशे.

आ पहेला भागमां बतावेला जीव, अजीव, त्रस अने स्थावरना भेदो छबीओ तथा चित्रोद्वारा तथा बीजी वस्तुओथी समजाववा जोईए अने दरेक पाठ पुरो थाय के तेनी नीचे आपेला सवालो अथवा एवा बीजा सवालो विद्यार्थीओने पूछवा तेमज समजाववा जोईए.

लेखक।



॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

बाळबोध जैनधर्म

भाग पहेलो.

पाठ पहेलो.

णमोकार मंत्र.

गाथा—

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ १ ॥

अर्थः—अरहंतोने नमस्कार हो, सिद्धोने नमस्कार हो, आचार्योने नमस्कार हो, उपाध्यायोने नमस्कार हो तथा लोकमां सर्वे साधुओने नमस्कार हो.

णमोकार मंत्रनो महिमा.

एसो पंच णमोयारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥ २ ॥

अर्थ—आ पांच नमस्कार मंत्र सर्वे पापोनो नाश करनार छे अने सर्वे मंगलोमां पहेलुं मंगल छे.

---

१ णमुक्कारो तथा णमोक्कारो पण पाठ छे.

पांच परमेष्ठीनां नाम—अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने सर्वसाधु ए पांचने पंच परमेष्ठी कहे छे.

सवालो—

१ णमोकार मंत्र शुद्ध बोलो.

२ आ मंत्रनो महिमा शुं छे ?

३ आ मंत्रमां केटला अक्षर छे ?

४ आ मंत्रमां कोने कोने नमस्कार कर्या छे ?

पाठ बीजो.

वर्तमान चोवीस तीर्थंकरोनां नाम.

१ ऋषभनाथजी,
२ अजितनाथजी,
३ संभवनाथजी,
४ अभिनन्दननाथजी,
५ सुमतिनाथजी,
६ पद्मप्रभुनाथजी,
७ सुपार्श्वनाथजी,
८ चन्द्रप्रभुनाथजी,
९ पुष्पदन्तनाथजी,
१० शीतलनाथजी,
११ श्रेयांसनाथजी,
१२ वासुपूज्यनाथजी,
१३ विमलनाथजी,
१४ अनन्तनाथजी,
१५ धर्मनाथजी,
१६ शांतिनाथजी,
१७ कुन्थुनाथजी,
१८ अरनाथजी,
१९ मल्लिनाथजी,
२० मुनिसुव्रतनाथजी,
२१ नमिनाथजी,
२२ नेमिनाथजी,
२३ पार्श्वनाथजी,
२४ महावीरनाथजी,

आमांथी ऋषभने आदिनाथ, पुष्पदंतने सुविधिनाथ अने महावीरने श्रीवर्द्धमान, सन्मति, अतिवीर अने वीर पण कहे छे.

चोवीस तीर्थंकरोना चिह्न.

१ बळद, २ हाथी, ३ घोडो, ४ वांदरो, ५ चकवो, ६ कमळ, ७ साथीयो, ८ चंद्र, ९ मगर, १० कल्पवृक्ष, ११ गेंडो, १२ पाडो, १३ सुवर, १४ साहुडी, १५ वज्रदंड, १६ हरण, १७ बकरो, १८ माछली, १९ कळश, २० काचबो २१ रातुं कमळ, २२ शंख, २३ सर्प, २४ सिंह.

सवालो–

१. पांचमा, दशमा, वीसमा अने चोवीसमा तीर्थंकरनां नाम कहो ?

२. बधुं मळीने तीर्थंकर केटला छे ? तथा पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरनुं नाम शुं छे ते कहो ?

३. एवा कया कया तीर्थंकर छे के जेनां नाम एकथी वधारे छे ?

४. सुविधिनाथ केटलामा तीर्थंकर छे ? एना पहेलाना तीर्थंकरोनां नाम कहो ?

५. तीर्थकर चोवीसज होय छे के वधारे ओछा पण होय छे ?

६. चंद्रप्रभ, विमलनाथ, मल्लिनाथ अने वासुपूज्य ए तीर्थंकरोंना चिह्नो कयां कयां छे ते कहो ?



પાઠ ત્રીજો.

—⊱ જીવ અને અજીવ. ⊰—

જીવ-એને કહે છે કે જેમાં જીવ હોય, જે જીવતો હોય અને જેમાં જાણવાની શક્તિ હોય. જેમકે-પુરુષ (મરદ), સ્ત્રી, (બાયડી), ઘોડા, બળદ, કીડી, મંકોડા વગેરે. ભાવાર્થ-જગતમાં આપણે જેટલા પુરુષ, સ્ત્રી, પશુ પક્ષી કીડી, મંકોડા વગેરેને ખાતા, પીતા, ફરતા, હરતા દેખીએ છીએ તે બધામાં જીવ છે.

અજીવ-એને કહે છે કે જેમાં જીવ હોતો નથી, જેમકે-સુકી માટી (મટોડી), ઈંટ, પથ્થર, લાકડું, ટેબલ, ખુરશી, કલમ, કાગળ, ટોપી, રોટલી, બાટી વગેરે.

જીવના ભેદ.

જીવ બે પ્રકારના હોય છે, એક મુક્ત જીવ અને બીજા સંસારી જીવ.

૧. મુક્ત જીવ એને કહે છે કે જે સંસારથી મુક્ત થઈ ગયા છે એટલે જેનો મોક્ષ થઈ ગયો છે અને જેણે સદાને માટે સાચું સુખ પ્રાપ્ત કરી લીધું છે અને જે કદિ પણ સંસારમાં ફરીથી આવતા નથી તે.

२. संसारी जीव ते छे के जे संसारमां भ्रमण करी रहेला छे अने जन्ममरणनां दुःख सहन करी रहेला छे. संसारी जीव बे प्रकारना होय छे— १ त्रसजीव, २ स्थावरजीव.

त्रसजीव एने कहे छे के जे पोतानी इच्छाथी चालता फरता होय, व्हीता होय, न्हाशता होय तथा खावानुं शोधता होय एटले—बेइन्द्रिय, त्रणइन्द्रिय, चारइन्द्रिय अने पंचेंद्रिय जीव। जेमके— इयळ, कीडी, मांखी, वांदा, घोडो, बळद, मनुष्य वगेरे.

स्थावरजीव एटले एकेंद्रिय जीव एने कहे छे के जे उपजे छे, वधे छे अने मरे छे परंतु पोतानी मेळे हाली चाली शकता नथी. जेमके-पृथ्वी, (जमीन), अप (पाणी), तेज (अग्नि), वायु (हवा), वनस्पति (झाड वगेरे).

सवालो -

१. झाड, उंदर, पोपट, वाघ, समडी, हाथी, घोडो, जोडा, बकरी, रुपिया, पवन, दीवो, कागळ, केरी, पान, कान, गाडी, घोडी, साडी, दाढी, हाडकां चामडां, वाळ, दाळ, अने तरवार आ बधामां जीव कोण छे अने अजीव कोण छे ?

१. त्रस अने स्थावरमां शुं भेद छे ते उदाहरण आपीने बतावो.

२. त्रस जीव केटला अने कया कया छे ?

४. स्थावर जीव केटला प्रकारना अने कया कया छे ?

५. हाथी, प्राणी, घोडो, हवा, कूतरो, बिलाडी, देवता (अग्नि) अने केरी आ जीवोमांथी त्रस कया छे अने स्थावर कया छे ?

६. मुक्त जीव संसारमां आवे छे के नहीं ? शुं तमे जेटला जीव जुओ छो ते बधा संसारी छे ?



पाठ चोथो.

इन्द्रिओ.

इन्द्रिय–एने कहे छे के जेनी मारफते जीव ओळखी शकाय. ते इन्द्रियो पांच होय छे–१. स्पर्शनइन्द्रिय अर्थात् त्वचा [चामडी]. २. रसनाइन्द्रिय एटले जीभ. ३. घ्राणइन्द्रिय एटले नाक. ४. चक्षुइन्द्रिय एटले आंख. ५. कर्णइन्द्रिय एटले कान.

स्पर्शनइन्द्रिय–एने कहे छे के जेने अडकवाथी हलकुं, भारी, लुखुं, चीकणुं, कोमळ, कठण, ठंडुं, गरम वगेरेनुं ज्ञान थाय. जेमके–देवताने अडकवाथी गरम अने पाणीने अडकवाथी ठंडुं मालम पडे छे वगेरे.

रसनाइन्द्रिय–एने कहे छे के जेनाथी खाटो, मीठो, खारो, कडवो, तीखो, कषायलो [कटाणो] रसनुं [स्वादनुं] जे ज्ञान थाय ते. जेमके–पेंडो चाखवाथी मीठो, लीमडानां पांदडा कडवां, मरचां

तीखां अने लींबु खाटा मालूम पडे छे.

घ्राणइन्द्रिय-एने कहे छे के जेनाथी सुगंध (खुशबो) अने दुर्गंध (बदबो) नुं ज्ञान थाय छे ते. जमके गुलाब, केवडाना फूलोथी सुगंध अने ग्यासतेलना तेलथी दुर्गंध आवे छे.

चक्षुइन्द्रिय-एने कहे छे के जेनाथी काळो, पीळो, वादळी, लाल अने सफेद रंगनुं तथा आ रंगोनी मेळवणीथी अनेक प्रकारना रंगोनुं ज्ञान थाय छे ते. जेमके दूध, दहीं, चांदी सफेद छे, कोयला काळा छे अने लोही लाल छे. सोनुं पीळुं अने मोरनी पांख वादळी छे.

कर्णइन्द्रिय-एने कहे छे के जेनाथी आदमी, जानवर वगेरेनो अवाज जाणी शकाय छे ते.

सवालो—

१—इन्द्रियो केटली होय छे तेनां नाम कहो ?

२—त्रीजी अने पांचमी इन्द्रियथी शुं जाणी शकाय छे ?

३—सूंघवुं अने जोवुं ए कइ कइ इन्द्रियनुं काम छे ?

४—कीडीने आंख होती नथी त्यारे ते मीठाई वगेरेनी पास केवी रीते चाली जाय छे ?

५—एक जानवरनी पास बंदूक फोडी त्यारे ते ऊडयुं नहीं, आनुं शुं कारण छे ? एवुं कयुं जानवर छे ?

६-इन्द्रिय वगर जीव होई शके के नहीं ?



पाठ पांचमो.

पांच प्रकारना जीव.

एकेन्द्रियजीव-एने कहे छे के जेने मात्र एकज स्पर्शनेन्द्रिय होय छे. जेमके-माटी, पाणी, अग्नि, पवन, फळ, फूल वगेरे.

बेइन्द्रियजीव-एने कहे छे के जेने स्पर्शन अने रसना आ बे इन्द्रिय होय. जेमके-इयळ, कीडां, मूंड, शंख, अळसिया, छीप वगेरे.

त्रणइन्द्रिय जीव-एने कहे छे के जेने स्पर्शन, रसना अने घ्राण आ त्रण इन्द्रियो होय छे ते. जेमके-कीडी, कीडा, मांकड, मंकोडा, जू वगेरे.

चारइन्द्रिय जीव-एने कहे छे के जेने स्पर्शन, रसना, घ्राण अने चक्षु आ चार इन्द्रियो होय छे ते. जेमके भमरो, माखी, मच्छर, तीड, करोळीयो वगेरे.

पांचइन्द्रिय जीव-एने कहे छे के जेने पांचे इन्द्रियो होय छे ते. जेमके-देव, नारकी, मनुष्य, पशु वगेरे.

सवालो-

१. माखी, बळद, कूतरो, साप, कीडी, इयळ, छीप, हाथी, देवता अने पाणी-आ जीवोने कई कई इन्द्रियो होय छे.

२. चार इन्द्रिय जीवोमां बे इन्द्रिय जीवोथी शुं वधारे छे?

३. जे जीवने आंख होय छे ते जीवने नाक होय छे के नहीं अने जे जीवने नाक होय छे तेने आंख होय छे के नहीं?

४. तमने कई कई इन्द्रियो छे? स्थावर जीवने कई कई इन्द्रियो होय छे?

५. एक माणस जन्मथी आंधळो उत्पन्न थयो होय छे तो कहो के तेने कई कई इन्द्रियो छे?

६. मूंगा अने बहेरा मनुष्यमां शुं फेर छे?

७. कई इन्द्रिय तमोने वधारे काममां आवे छे अने कई इन्द्रिय तमने वधारे गमे छे?

८. अमे एक एवो मनुष्य जोयो के जेने जीभ, आंख, कान कई पण नहोतुं तो कहो के अमारुं कहेवुं साचुं छे के नहीं?

९. ज्यारे मनुष्यने पांचे इन्द्रिय होय छे तो बहेरां, मूंगाने माणस कहेवो जोइए के नहीं?

१०. त्रण इन्द्रिय जीव थवुं सारुं छे के चार इन्द्रिय जीव?



उपयोगी शिखामणो.

१. भणवामां मन लगाडो.

२. मोटा पुरुषोने मान आपो.

३. नित्य साचुंज बोलो.

४. कह्या वगर कोई वस्तु लो नहीं.

५. कोईनुं पण मन दुखवो नहीं.

६. सर्वेनी साथे मीठां वचन बोलो.

७. शरीर हमेशां साफ राखो.

८. पाणी बेवडे गळणेथी गाळीने पीओ.

९. भाई ब्हेनो साथे हेत राखो.

१०. बधाने 'जी' कहीने विनयथी बोलावो.

११. सवारमां उठी णमोकार मंत्र अने स्तुति भणी जाओ.

१२. ब्रह्मचर्य व्रत पाळो.

१३. आलस्य कदि पण करो नहिं.

१४. मांस, मद्य अने दारुने कदी अडको नहीं.

१५. रात्रि भोजन (रात्रे जमवुं) कदि पण करो नहीं.

१६. मा बाप अने गुरु साथ विनयथी वर्तो.

१७. कोईनी चाडी (चुगली) करवी नहीं.